



ಮೈಸೂರು ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾರಾಜರ
ಸರಸ್ವತಿಮಠ ಸಂಪಾದಕಾಲಾ.

ಶ್ರೀಮನ್ಮಹಾರಾಜ ಸಂಸ್ಕೃತ ಮಹಾ
ಪಾಠಶಾಲಾ, ಮೈಸೂರು.

೧. ಪುಸ್ತಕದ ಹೆಸರು
೨. ಗ್ರಂಥಕರ್ತೃ ಯು ಪ್ರಕಾಶಕರು
೩. ಆಕೆಷೆ ನಂ.
೪. ಕ್ಯಾಟಲಾಗ್ ನಂ.
೫. ಬರೀದಿ
೬. ತಾರೀಖು

WD 1179-GBPM-6,000-17-1-45.

ತಾರೀಖು

MAHARAJA'S SANSKRIT COLLEGE LIBRARY
MYSORE.

Accession No..... Date.....
Class No..... Price.....

अजीर्णमंजरी

परिद्धत

दत्तगम माथुर कृत ॥

हस्वफरमायसलालादेवीदासजी

खचीके

लाला बलदेवप्रसादसाहबकर्क

नचीसावक

के

मकानमें काशीसमाननिजशिला

पंचमें॥

लाला हरप्रसादकेप्रबंधसेछपी

सम्बन्ध

SHARAJA'S SANSKRIT COLLEGE LIBRARY
MYSORE १८४०

cession No. सन्

ss No. १८८३३०

श्री

श्रीशम्भुदे॥

श्रीनिकुञ्ज विहारिरो नमः

धन्वंतरि धृतकरं मृतपूराकुम्भं
पीतावरं सकल सिद्धसुरन्द्वं
द्यं वन्देरविन्दनयनं मणिमाल्य
मायुर्वेदप्रवर्तकमनुस्मृतिरोग

नाशम् १

अर्थ- धरहे अमृत का पूर्ण कलश हाथ में जिनेपी
ताम्रर के धारण करनेवाले- सब सिद्ध और सुरेन्द्र कर के
बंध कमल से नेत्र मणि की माला के धारण करनेवाले आयुर्वेद
वैद्य विद्या के प्रगट करनेवाले- तथा स्मरमात्र से ही रोगों को
नाश करे ऐसे श्री धन्वंतर भगवान् को हम ग्रंथ की आदि में
नमस्कार करते हैं

राधिकारमणं नत्वा श्रीवृन्दावन
चारिणं दत्तरामः प्रकुरुते दिवा
र्याजीर्णमंजरीम् ॥ २ ॥

अर्थ- श्रीवृन्दावन विहारी राधिकारमण को नमस्कार
र दत्तराम ओष्ठ है प्रयोजन जिसका ऐसे ही इस अजीर्णमंज
री को रचना कर रहे हैं
यत सर्वेषु रोगेषु अजीर्णकारणं

स्मृतं ततस्तस्य निदानं च कथ्यते
पूर्वसंमितम् ॥ २ ॥

अर्थ- सब रोगों का कारण अजीर्ण रोग को कहते हैं क्योंकि
जब अन्न का परिपाक यथार्थ नहीं होय तब तब अनेक
ज्वरदि दुष्ट रोग इस मनुष्य को संतापित करते हैं इसी हेतु
से अजीर्ण रोग का पूर्वाचार्य के संमत निदान को कहते हैं
अजीर्ण रोग होने का कारण मंदग्नि है मंदग्नि होने से
ही अजीर्ण रोग होय है ॥ ३ ॥

अजीर्णरोगकी उत्पत्ति
अत्येवुषानाद्विषमाशनाच्च सं
धारणात्स्वप्नविपर्ययाच्च का
लेपिसात्स्यं सपुचापि भुक्तमन्नं
न पाकं भजते नरस्य ॥ ४ ॥

अर्थ- बहुत जल पाने से कुसमय भोजन करने से मल
मूत्र आदि वेग के रोकने से दिन में सोने से रात्रि में जागने
से अथवा भोजन के समय निरंतर लघु भोजन करने से
ऐसे मनुष्य के अजीर्ण रोग से अन्न नहीं पचै है ॥ ४ ॥

ईर्ष्याभयक्रोधपरिप्लुतेन लुब्धे
न सुगदैर्न्यनिपीडितेन प्रद्वेष
युक्तेन च सेवमानमन्नं न संप्य
क परिपाकमेति ॥ ५ ॥

अर्थ-ईर्ष्या-भय-क्रोध-इनके अष्ट प्रहर करनेसे लोभशोक
दीनता इनके करनेसे तथा अष्ट प्रहर वैरके राखनेसे मनु
ष्य के भोजनकर अन्न अच्छी रीतिसे नहीं पचै है ॥५॥

भुक्तानं पाचि नैव वह्नि नोदरजेन

तत् तस्योपरि पुनर्भुक्तमजीर्णं

तं विदुर्वुधाः ॥६॥

अर्थ-मंदाग्निसे प्रथम भोजनकर अन्न तो परि पाक भ-
यान होय उसके ऊपर फेर भोजन करे उसे अजीर्णी रोग कहते हैं ॥६॥

अजीर्णीके भेद

आमं विदग्धं विष्टब्धं कफ पित्ता

निलै त्विभिः अजीर्णीके चिदि-

च्छति चतुर्थं रस शेषतः ॥७॥

अजीर्णी पंचमं के चिनिर्दोषं दि

न पाकि च वदंति पष्टं चाजीर्णी

प्राकृतं प्रति वासरम् ॥८॥

अर्थ-कफ पित्त और वायु ये तीन दोषोंसे क्रमपूर्वक आ-
म विदग्ध और विष्टब्ध ऐसे तीन प्रकारका अजीर्णी होय
है और कोई आचारी कहते हैं कि आहार रसके शेष रह-
ने से चतुर्थ अजीर्णी होय है और रात्रिदिनमें जो आहार
पचै उसको निर्दोष पांचवां अजीर्णी कहते हैं और जो नि-
त्य है उसको प्राकृत अजीर्णी छठवां कहते हैं ऐसे अजी

र्णी रोग छः प्रकारका है परंतु मनुष्य अजीर्णी रोग चार
ही प्रकार का है सो पंचान्तर में लिखा भी है + पचा +

अजीर्णी प्रभवा रोगास्तदजीर्णा च

तुर्विधम् आमं विदग्धं विष्टब्धं र

सा जीर्णी चतुर्थकम् ॥९॥

अर्थ-मनुष्यों के अजीर्णी होनेसे रोग प्रगट होते हैं सो
अजीर्णी रोग चार प्रकार के हैं आम विदग्ध विष्टब्ध रसा
जीर्णी ऐसे चार प्रकार के हैं ॥९॥

आमादिक अजीर्णीके ल०

तत्रामे गुरु तोल्लेदः शोथो गंढा

क्षिकटगः उद्गारश्च यथाभुक्तम्

विदग्धः प्रवर्तते ॥१०॥

अर्थ-तिनमें आमाजीर्णीमें देह का जड़ होना छोट-गा-
ल और नेत्र इनमें सूजन डकार का आना और जैसे सा अ-
न्न खाये तैसा ही दलमार्ग होकर निकले उसे आमाजीर्णी कहते हैं

विदग्धाजीर्णीके ल०

विदग्धे धमतरामूर्च्छाः पित्ताश्च

विविधारुजः उद्गारश्च सधूमा

म्लः स्वेदो दाहश्च जायते ॥११॥

अर्थ-विदग्ध अजीर्णीमें धम व्यास और मूर्च्छा ये होते
हैं और पित्तसे अनेक प्रकार के रोग प्रगट हो सधूम खट्टी

डकार आवे पसीना आवे तथा दाह होय ॥११॥

विष्टब्धाजीर्णीके लक्षण

विष्टब्धे मूलमाध्मानं विविधा वा

तवेदनाः मलवाताप्रवृत्तिश्च

स्तम्भो मोहोऽगपीडनम् ॥१२॥

अर्थ विष्टब्ध अजीर्णीमें मूल वेदका फूलना अनेक वातसे पीडा मूल और अधोवायु की अप्रवृत्ति कहिये वेद हो जाना देहका जकड़ जाना मोह और अंगोंमें पीडा ये लक्षण होत हैं ॥१२॥

रसाजीर्णीके लक्षण ॥

रसशेषेऽत्र विद्वेषो हृदयासुद्धिगौरवे

अर्थ रसशेष अजीर्णीमें अन्नमें अरुचि हृदयमें भ्रष्टता और शरीर का जड़ हो जाना यह लक्षण होत हैं

चारों अजीर्णीमें सामान्य

उपचार

आमोचोष्णोदकं पयं दग्धे चोदर

स्वेदनम् विष्टब्धे रेचनं चैव शय

नं रसशेषके ॥१३॥

अर्थ आमोचोष्णोदकं पयं दग्धे चोदर स्वेदनम् विष्टब्धाजीर्णीमें दस्त लेना और रसशेष अजीर्णीमें शयन करना चाहिये

॥१३॥

अजीर्णीपाचन होनेके

दिवस

घृताजीर्णीदिनाः पंच तैले ह्राद

शकस्तथा तिथि संख्या पयस्य

क्लादध्निवा विंशति स्मृता ॥१४॥

अर्थ घृतका अजीर्णी पांच दिन पचता है तैलका वाराह दिन में दधका पंद्रह दिन में दही बीस दिन में पचता है ॥१४॥

आमानं सप्त रात्रेण दधिशोडश

भित्तया क्षीरं विंशतिभिर्तेयं मां

सं मासेन पच्यते ॥१५॥

अर्थ आमोचोष्णोदकं पयं दग्धे चोदर स्वेदनम् विष्टब्धे रेचनं चैव शयनं रसशेषके ॥१३॥

उष्णोदकं घृताजीर्णी तैलाजीर्णी

चकांजिकं गोधूमे कर्कटि श्रेष्ठा

कदल्यामफलैश्च तम् ॥१६॥

अर्थ घृतके अजीर्णी में गरम जल पीना हित है तैलके अजीर्णीमें कांजीपी वै गेहूंके अजीर्णीमें ककड़ी खाय और केला तथा आमके अजीर्णीमें घृत पान करे ॥१६॥

नाली केरफले सुतंदुल जलं क्षीरं

रसालेहितं जंबीरात्परसो घृतस

मुचितः सर्पिस्तु मोचाफले गोधू

मेषुचकर्कटी हिततमा मांसाद
ने कांजिकं नारंगे गुडभक्षणाच्च
कथितं पिंडालुके कोद्वमः ॥१७॥

अर्थ- नारियलगिरी खानेसें प्रगट अजीर्णीमें सुद्धचामलों
का धोयाहुआ जलपान करनाहितहै- आमकेचूसनेसें प्र
गट अजीर्णीमें दूधपानकरे- घृतके अजीर्णीमें जंभीरीकार
सपीवै- केलाकी फलीके अजीर्णीमें घृतपानकरे- गेहूँके अजी
र्णीमें ककड़ी पच्यहै- मांसभक्षणाजीर्णीमें कांजीका पानकरे-
नारंगीके अजीर्णीमें गुडखाना चाहिये- आलूके अजीर्णीमें
कोदोअधभक्षणाकरनाचहिये ॥१७॥

पिष्टानेसलिलं प्रियालफलजेय-
याहितामासजे खंडं क्षीरभवेतुल
कभुचितं कोष्मांबु कालिंगजे म
त्स्यं च तफलं त्वजीर्णशमनं मध्वंबु
पानात्यये तैलं पुष्करजे कटुप्रशम
नं शोषांस्तु बुध्याजयेत् ॥१८॥

अर्थ- पिष्टानि अर्थात् रोटी परीके अजीर्णीमें जलकापी
नाहितहै- खिरनीके अजीर्णीमें हरड़ खाना चाहिये- नदरके अ
जीर्णीमें खांदुहितहै- दूधके अजीर्णीमें छांछपीना हितहै-
तरबूजके अजीर्णीमें तत्राजलपीना चाहिये- मछलीके अजी
र्णीमें आंवकोचूसना चाहिये- मधुके अजीर्णीमें सहतयुक्तज

लपान करना चाहिये- कमलबीज खाने के अजीर्णीमें सरसों
का तेलपान करना चाहिये और शेष अजीर्णीको वैद्यस्वपनी बुद्धिसे
दूरकरे ॥१८॥

पनसेकदले कदले च घृतं घृत
पाकविधावपि जंभरसः तदपद
वशांति करं लवणं लवणं पि
चं तंदुलवारिपरम् ॥१९॥

अर्थ- कटहर के अजीर्णीमें केलाकी गहर खाना अच्छा
है- केलाकी गहर के अजीर्णीमें घी खाना घृतके अजीर्णीमें
जंभीरीकारस- जंभीरीरसा जीर्णीमें नोन नोनके अजीर्णीमें
सुद्धचांलोंका धोवनका जलपीना चाहिये ॥१९॥

नारिकेलिफलतालमूलयोः पा
चनेयदुहृतंदुलं विदुः तेवदं
तिमुनयोप तंदुलानक्षीरवारि
परिपाचयत्यपि ॥२०॥

अर्थ- नारियल को गिरी खानेके अजीर्णीमें- तथा तालफ
ल- मूली- इनके अजीर्णीमें चांवलों का धोवनपीना हि
तहै- और चावलों के अजीर्णीमें दूध और पानी पीना अहितहै
दाडिमामलकतालतिंदुकीवी-
जपूरलवलीफलानिच वाकु-
लं फल मतीव पाचयेत्याकमेति

वकुलं स्वमूलतः ॥२१॥

अर्थ- अनार- आमले- तालफल- तिदुकीविजोराइमली-
इन्के अजीर्णीमें मौलसरीके फलखाने चाहिये- मौलसरीके
अजीर्णीमें मौलसरीके जड़को खानेसे पाचन होय है ॥२१॥

माधुक मालूर नृपादुपानां परू
यरं वज्ररकपित्तकानां पाकाय पे
यं पिचुमंदवीजं सिद्धार्थको हंति च
पीजपूरम् ॥२२॥

अर्थ- महुआ- वेलफल- खिरनी- खजूर- फालसे- इनके अ-
जीर्णीमें- नीमके बीज को तेलमें पिसके पीना चाहिये और
विजोरे को अजीर्णीको सरसों नाश करे ॥२२॥

आम्रातकोदुंबरिपिप्पलीनां फ
लानि च क्षुद्रवटादिकानां वि
श्वोषधं पर्युषितोदकेन सौवच
ले तावत्फलस्य पाकम् ॥२३॥

अर्थ- गलर- पीपल- आम- पाकर- वड- इनके फल खा-
नेसे अजीर्णीमें वासेपानीमें सोठ पीसके पीना योग्य है
और आमका अजीर्णीमें सेया लोरासे होता है ॥२३॥

मृगालूरवज्ररकहरहराकसेरुशृंगा
दकशर्कराणां पयाविपाकाय च भद्रं
मुस्तं तथा रासोनेषु च भद्रं मुस्तम् ॥२४॥

अर्थ- कमलमूल अर्थात् भसेंडा- खजूर- सुनका- कसेरु-
सिंघाड़े खांड इन सबका अजीर्णीनागर मोथा नाशक है-
और लहसुनका अजीर्णी दुपपीने नाश होय ॥२४॥

गोधूममाधौ हरिमंथमुद्गौ यवांसु
तीनां कितवो निहंति यन्मातुलु
गीफलमेति पाकं क्षरोनसोयं ल
वणानुभावः ॥२५॥

अर्थ- गेहूं उड़द चना मूंग जो मटर इनका अजीर्णी-
धतूरेके रससे नाश हो ताहै और यिजोरेका अजीर्णीसे धे
नोनसे नाश होता है ॥२५॥

सौवीरं फलमुष्णवारिहृन्पात्या-
चीनामलकंच राजिकैका खा
जं रं च परूषकं पिपालं तैलं ता-
लफले पचेन्मरीचम् ॥२६॥

अर्थ- बेरके अजीर्णीको उष्णजल नाश करे प्राचीन अ-
मले के अजीर्णीको राई दूर करे- कुहारा- और फाल सेके
अजीर्णीको तथा खिरनीके अजीर्णीको तेल खाना हित
है तालफलके अजीर्णीको मिर्च दूर करे ॥२६॥

नागरं हरति विल्वजां च वंपाच
येन्मधुरिका कपित्थजं सर्वथैव
सकलामयहं नीपीतये गिजन-

नी गदितासा ॥२७॥

अर्थ- वेलफल जात्रम के अजीर्ण को सोंठ पचाती है
के अके अजीर्ण को सोंठ पाचन करे यह विशेष करके स
र्वमाधीनाश करे अग्निदीप्त करे असी कहती है २७

पनसामलकीफलपक्व ये भजत
सर्जतरो अवीज के सकल मय्यु
दितं नुदिने फलं प्रयत्नति प्रसूतं

कपिकच्छुजम् ॥२८॥

अर्थ- कटहर आमले इन्के अजीर्ण में सर्जतरु के बीज
भक्षणा करे और किसी फल का अजीर्ण हो उसमें कोछ
के बीज खाना हित है ॥२८॥

पिशितपनशयोः स्यादाप्रवीजे
नपाकः कृशरमहिषयो विस्तीर
यो सैधवेन चिपिटपरिणतिः स्या
त्पिप्लीदीप्यकाभ्यामपहरति
तुषां बुद्धेदलानां मजीरां ॥२९॥

अर्थ- मांस और कटहर का अजीर्ण आम की गुठली से
नाश होय जुद्ध तिल चामल इन्के मिलाने कृशर अर्थात्
खिचड़ी से होती है और भैंस का दूध इन दानों का परिपाक
संघेनोन से होता है और चिरवा का अजीर्ण पीपस्वौर अ
जमायन से नाश होता है तथा दोस्त का अजीर्ण से मंगुर

द आदिका अजीर्ण कांजी से नष्ट होता है ॥२९॥

कर्पूरपूंगीफलनागवल्लीकाशमी
रजातीफलजातिकोशं कस्तूरि
काशोलुकनालिकेरफलं पचत्वा
शुसमुद्रफेन ॥३०॥

अर्थ- कपूर सुपारी तांबूल केशर जायफल जावित्री क
स्तूरी बहेडा नारियल इन्का अजीर्ण समुद्र फेन पचाता है ३०

श्यामाकनीवारकुलस्य षष्ठीनिष्ठा
वकंगर्दधिमंदुकस्तु चिंचाकुल
स्योतिलसैलयोगोजटादनाद
स्य निहंत्यप्यामम् ॥३१॥

अर्थ- सामखिया तिन्नी कुलथी साठी चामल वनमंग
कांगनी इन्का अजीर्ण वही के मठा से नाश होता है इम
ली कुलथी इन्का अजीर्ण तिल के तेल से दूर हो आम
का अजीर्ण चौलाई की जड़ से नष्ट होय है ॥३१॥

कसेरुशृंगाटमृगालमृद्वोरवर्जर
खंडाखपिनागरेण पलासभस्मा
बुतथारजोवारसो निहंन्नाद्रममि
सुजातं ॥३२॥

अर्थ- कसेरु सिंघाड़े कमल का कंद दाख खजूर खांड
इन्का अजीर्ण सोंठ से नाश होता है पौड़ा गंडा का अजी

गी टाक मसको पानीमें मिलाकर पीनेसे शोथ होता है ॥ ३२ ॥

निम्बूफलेनाय्यथ बोधरोनकोमां
बुनावाद्युतमेतिपाकम् तिलादि
तैलान्यधिकोजिकेन सर्जस्य मञ्जा
पनसामलकैः ॥ ३३ ॥

अर्थ- घृत वा अजीर्णी नीबू अथवा भिरच अथवा गर
मशीतलजलसे पचे है तिलसे आदिले सब तेलों का अजीर्णी
कांजी से पचता है कटहर और आमले का अजीर्णी संखुआ से पचे
है-

किमत्रचिचंबहुमांस मत्स्यभोजी
सुखीस्यात्परिपीतसक्तः दुत्यदु
तं केवलवन्निष्कमांसेन मत्स्यः
परिपाकमेति ॥ ३४ ॥

अर्थ- बहुत मांस और बहुत मछी खाने वाला मनुष्य
मद्यपान करनेसे सुखी होय यह आश्रय नहीं है परंतु केव
ल आंच में पका मांस अर्थात् कबाब से मच्छली का अ-
जीर्णी पचता है यह बड़ा आश्रय है ॥ ३४ ॥

कपोतपारावतनीलकंठकपिं
जलानां पिशितानि जग्ध्वा का
सस्यमूलं परिपीय पिष्टसुखीभ-
वेन्नोबहुशोऽनुभूतम् ॥ ३५ ॥

अर्थ- कबूतर और परका कबूतर मोर सुपेद तीतर इन्के

मांस खाने से घृण्ट अजीर्णी में कांस की जड़ को जल में पीस कर पी
ने से दूर होता है यह प्रयोग हमारा अनुभूत है अर्थात् अजमाया है

व्योधैरसालासुरभीपयस्तु मंडेन
कोष्मेन विपाकमेति शंखस्य च
गी नहयादिनारीपयोदधिसिप
सुपेतिपाकं ॥ ३६ ॥

अर्थ- सिखरिणी का अजीर्णी चिकुटा (सोठ-भिरच-पीपर)
से पचता है और गौ के दूध का अजीर्णी चौदह गुरों जल युक्त
मंड शीतल और गरम से पचता है भात के पानी को मंहु कहते
हैं तथा खुरवाले घोड़ा से आदिले सब पशुका दूध और दही
का अजीर्णी शंख चर्गी से पचता है ॥ ३६ ॥

वटोवेसवाराहवंगेन फेनीशामे
पर्यटः शिगुवीजेन याति करण
मूलतोलडुका पयशाहा विपा-
कोभवेच्छकुली मंडयोश्च ॥ ३७ ॥

अर्थ- उरद मंगकी पकोड़ी घृत में अथवा तेल में वनी हो-
य सोमद्य विशेष से परिपाक होय फेनी लींग से पचे- पाप
ह सहजने के बीज से पच लड्डु पुष्पा छाछ आदि से वनी कढ़ी
आदि समस्त का अजीर्णी और पूरी मांड़ा इत्यादिक का अ-
जीर्णी पीपरामूल के खाने से नाश होता है ॥ ३७ ॥

श्वविज्ञोधाशस्त्रकी चित्रलाया

ग्याविहीरात् कोलकूमादयोपि
जीयेत्येवं पायसोमुद्गयथात्मायु
दादय्यार नालं सुखाय ॥३८॥

अर्थ- पंचनखवाले जानवरों का मांस जैसे गोह सेह कर और
रोज प्रकार कछुआ मकली से आदिले इनके मांस का अजीर्णी
भेड़ के दूध से पका है और खीर मूंग का यूप पाने से पचती है
और सिर के का अजीर्णी समुद्र नोन खाने से रहो ता है ॥३८॥

तप्तं तप्तं हेम वातारमणौ वारंवारं
क्षिप्तं मंभस्सुतञ्च पीत्वा वश्यं दी-
र्घकालोपपन्नमेभोजीर्णीशीघ्रमे-
वं जहाति ॥३९॥

अर्थ- सुवर्ण अथवा चांदी को वारंवार तपाकर जल में बुझा
वे उस जल के पीने से वह काल का जल कृत अजीर्णी शांति हो ॥३९॥

पालं किकाके चुककारवृक्षीवार्ता
कवंशांकुरमूलकानां उपोदिका
लावुपटोलकानां सिद्धार्थकोमे
घर वस्य पक्षौः ॥ ४०॥

अर्थ- पालक छत्राक जिसको बालक स्यापकी छत्री कहते
हैं करेला वेगन यांसके कोपल मूली मोई का साग मीठी तुन्वी
परवल चौंरई इन सब का अजीर्णी सरसों के साग खाने से
॥ नष्ट होय ॥४०॥

सुंठी सती नस्पचनागरे गजवीरयोः
कोद्वको निहंता जरासिरागैरकच
दनाभ्यां मभ्येति पाकं बहुशो नुभूतम्

अर्थ- मटर का अजीर्णी सोंठ से नष्ट होय जंभीरी नीबू नां
गी इन दोनों का अजीर्णी कोदों अन्न से पचै ये हमा निश्चे
य कर भया है ॥ ४१॥

पटोलवशांकुरकारवल्लीफलान्य-
लावुनिवहनिजग्धा क्षारेदकं ब्रह्म
तरोर्निपीयेभोक्तुं पुनर्वाहति तावद्व

अर्थ- परवल वांस के कोपल करेला मीठी तुन्वी इनके अजीर्णी
में पलास (दाक) के क्षार को जल में पीने से तत्काल परिपाक होय
और उसी वक्त उत नहीं भोजन करने की इच्छा होय ॥४२॥

विपच्यतेशरणाको गुडेन तथा सुकंते
दुलतो यपानात् जंवीरनीरेगानिशार
सानं मुस्तेन चूर्णं परिपाकमेति ॥४३॥

अर्थ- जिमीकंद का अजीर्णी गुड़ से पचै आलू का अजीर्णी चू-
मन के धोवन से पचै हलदी का अजीर्णी जंभीरी के रस से पचै ल-
हसन का अजीर्णी मोथा के चूर्ण से परिपाक होय ॥४३॥

चंचूकसिद्धार्थकवास्तुकानां गा-
यत्रिसारक्वथितेन पाकः शाका-
निसर्वाण्युपयांति पाकं क्षारेण

सद्यस्तिलनालजेन ॥४४॥

अर्थ. चूका सरसों वधुआ इन्के खानेसें प्रगट अजीर्ण रोग
रसार के काढ़ेसें परिपाक होय और सब साग मात्र अजीर्ण
तिल के खारसें नाश होय ॥४३॥

स्नेहाजीर्णरोगिणां मुद्गचूर्णज्वा-
लाप्राक्तो हन्ति वै रोचिकानां माया
रडा निम्बिम्बमूलेन पाकं चिंचामु-
चत्यम्लतां चूर्णयोगात् ॥४४॥

अर्थ. स्नेह कहिये. तेल. घृत. वसा. मुद्गा. इन्का अजीर्ण मू-
गके चूर्णसे पचता है विरेचक द्रव्य खानेका अजीर्ण सिर-
कासें पचता है उरदका अजीर्ण नीबूसें पचे इल्ली को पहर
र के खारमें मिलानेसें खटाईका नाश होय और पचे ॥४४॥

उष्मेन शीतं शिशिरेण चोष्णमम्ले-
न च क्षारगणो गुणाय स्नेहेन ती-
क्ष्णो वमनातियोगे सिताहितास्या-
दितिकाश्य पोक्ति ॥४५॥

अर्थ. सरदीके रोग गरम औषधसें नष्ट होय और गरमीके रोग
सरद औषधसें नष्ट होय सब खार खटी वस्तुसें गुणकारक होय
तीखी मिरच आदिवस्तु घृत तेल आदिसें गुणकारक और वम-
नकारक औषधका औगुन मिश्रीसें शान्ति होय ॥४५॥

ताम्वूलमध्यस्थितचूर्णकेन सन्द-

खते यस्य सुखं नरस्य तैलेन वा के-
वलकांजिकेन सुखाय गन्धूषम-
सौ विदध्यात् ॥४६॥

अर्थ. जिस मनुष्य का सुख पान के बीड़ा खानेसें फजरनेल
मे अर्थात् चूने कस्येसें फटे वह तेल अथवा सिरकासे कुल-
ला करे तो आराम होय ॥४६॥

शीतोदकं नरस्य जरोगहारि नारी प-
यश्चांजन रुक्मिणाशि रालोदकं
धूमगदे प्रशस्तं धात्री विलेपोति
विरेचनोत्थे ॥४७॥

अर्थ. संघने के रोग शीतल जलसें नष्ट होय और अंजनसें
प्रगट रोग स्त्रीके दूधसें नष्ट होय धूप पान अर्थात् इन्का पी-
ने के रोग राल के जलसें नष्ट होय और अतिदस्तोंका रोग
आमरे के लेपसें नष्ट होय ॥४७॥

मृगस्य मांसं श्रमजेनुकूलं प्रवात-
सुप्तिः सुरता वसाने क्षारायणासें
धवसाधितं तुच्छा गांडभुक्तं सुरता-
तिरेके ॥४८॥

अर्थ. डंड कसरत के करनेसें प्रगट जो ज्वरादिक सोमृग के
मांस खानेसें नष्ट होय स्त्रीसंग के पिछाड़ी हवादार स्थान में
सोना अच्छा है तथा स्त्रीसंग अधिक करा होय उससें प्रगट

रोगमें जवारवार पीपर सेंधानोन इस्को मिलाकर पकाहु
आ वकराका अंडकोश खाना हित होय ॥४८॥

अवरा पूरा जेतिल तैलतः ॥

अवरा पूरा मेव सुखं विदुः ॥

कवल जेषु गदेष्वथ कारयेत् ॥

कवल मार्दक जडु जं सुनः ॥४९॥

अर्थ-कानमें तैलादिक डारने से घाट रोग के दूसरे तैल
डारने से शांति होय और घास अर्थात् गस्सर खाने के रोग के
रश्मिदरक रस युक्त घास खाने से नष्ट होय ॥४९॥

रावीरु चीनारु कयोः फलानि कू

आंड कंच च पुसी फलं च निह

निस घोहिक रंजबीजं रसंतया

वारुणि मेक मूलम् ॥५०॥

अर्थ-ककड़ी चेना आरु क जिस्को पहाड़ लोग बीर
सेन कहते हैं पैठा खीरा इन्का अजीर्ण कंजा के बीज
के स्वरस से अथवा वरना की जड़ यह ये कही पूर्वोक्त
अजीर्ण का नाश करे ॥५०॥

खीकेशा मुनि पीतमा शुह न्यात्

पाचीनामलकं सपाणिमर्दम्

शुंठी धान्यकवारि हंतिसद्य ॥

स्तास्तानामविकासजाचिकारान्

अर्थ-आमर और करोंदा इन दोनों का अजीर्ण खीके के
शोधन जल के पीने से शांति होय और आम का रोग से
ठ और धनिया के काढ़े से नष्ट होय ॥५१॥

मदयति नहि मघं जातु चेत्पीतम

घः पिवति घृत समेतं शर्करामे

वसद्यः अथ घन मधुकेल कुष्ट

दावै लवालु प्रकटित कवलास्ये

मघगंधोः पिन स्यात् ॥५२॥

अर्थ-जो मनुष्य दारु पीवे और उस के ऊपर मिश्री मिला
घृत पान करे तो मघ अर्थात् दारु का अमल नहीं बढ़े और
नागर मोथा सुलहटी बलापची कूट देवदारु सुगंधबाली
इन्का चूर्ण मुख में रखने से मुख में मय की दुर्गंध नहीं आवे

कूआंड कस्य स्वरसो गुडेन पीतो म

दं कोद्वजं निहंति पयोनिपी

तंसितया समेत मुत्पन्न मृत्युत्वा

मया करोति ॥५३॥

अर्थ-कोदो अन्न का मद गुड़ और पेठ के स्वरस पीने से
शांति होय और धातु क्षीण काश्यादिक रोग मूत्र में मिश्री
मिलाय कर पीने से दूर होता है ॥५३॥

घ्रात्वा शुकाक्षीं विपिनो पलेवासं

प्राश्य किंचित्पदु शर्कराम्वाशीता

सु पीत्वा चुलकेन वापि प्रसृत्य

पूगी फल मुञ्जहाति ॥५४॥

अर्थ- सुपारीका चन्माद पुकनेची अथवा सुर्वा के सेंपने
सैं नाश होय अथवा थोड़ी सी चीनी भस्त्रा करने सैं अथ
वा शीतल जल पीने सैं नाश होय सुपारीका चन्माद जब
होता है जब सुपारी कंठ में अटक जाती है ॥५४॥

एलाई का भोधर चंदनानां चूर्ण

यथा पूर्व विवर्धितानां प्रचर्म

वत्के धृत माशुहंति सुरारसोना

दिज सुग्र गंधम् ॥५५॥

अर्थ- इलायची अदरक नागमोथा चंदन यह सब व
स्तु कम सैं बरती लेय अर्थात् इलायची ४ भाग अदरक ३
भाग मोथा २ भाग चंदन १ भाग इन सब को कूटकर मुख
में धारण करणों सैं मदि रात्र और लहसन इत्यादिक सर्व व
स्तु की सुख दुर्गंध नाश होय ॥५५॥

गुड मधु कांजिक तक्र विभागाः

सुर्दि गुराण्युयथोत्तरमेते त्रि

रादि नान्यथ धान्ये शल स्यापि

त मेतद्दिशंति हि शक्तम् ॥५६॥

अर्थ- गुड सहत कांजी बाक इन सब को कम सैं द्वि गुरा
तलेय जे सैं गुड सेंदना सहत सहत सैं दनी कांजी कांजी सैं

दनी बाक इन सब को मिलाय एक पात्र में भरकर पान
की राशि में धर दे इसके शक्त कहते हैं ॥५६॥

शक्त मुक्त मपियदुहभेदेहंति सर्व

मिदमामजरवेदं यन्मयागदितं मधु

शक्तं तद्विषगिरयपाचन मुक्तं ॥५७॥

अर्थ- वैद्यों ने शक्त के अनेक भेद कहे हैं यह सब शक्त
आम के रोग नाशक हैं परंतु इस ग्रंथ में जो मधुशक्त कहा
है इसको वैद्य पाचक कहते हैं यह काशी राज का सिद्धांत है

सैंधव चिकटु धान्य जीरकै दीदि

मीरजनिरामटान्वितः पाचनो

वज्रटराग्नि दीपनो वेशवारज

दितो मनीषिभिः ॥५८॥

अर्थ- सैंधानोन सोंठ पीपर मिरच धनियां जीरा अनार
दाना हरदी और हींग इन सब को कूटकर एक बकरने सैं
वेशवार नाम का मसाला बनता है यह मसाला पाचन और
दीपन है और सैं बुद्ध मान वैद्य कहते हैं ॥५८॥

विण्वोषध च पलोषरा सैंधव धान्य

कहिं गुराजीभिः करका जाजियुता

भिर्गदितो सुनिभिलु वे सवारो यम् ५९

अर्थ- सोंठ मिरच पीपल सैंधानोन धनियां हींग राई
अनारदाना अजमायन इन्को मिलाने से भी वेशवार होता है

अनेक कविवाक्ये सुसारमादाय
यत्नतः दत्तरामेणारचितासंक्षिप्त
माजीर्ण मंजरी ॥ ६० ॥

अर्थ- अनेक कवियों के वाक्यों का सार ले दत्तराम ने संक्षेप
सैं अजीर्ण मंजरी रचना करी ॥ ६० ॥

इति श्री माथुर वंशोद्भव परिड-
तक हेयालाल पाठक तत्सुवदत्त
रामरचित अजीर्ण मंजरी समाप्ता ॥ ६१ ॥

अथ छोटी अजीर्ण नाशक औषध अपनी नुभव-
करी मंदानि पीड़ित मनुष्यों के हितार्थ लिखते हैं ॥ ६१ ॥

विश्वभेषजचूरी

विश्वभेषजं हिं गुटं करणं मागधीच-
सौवर्चलं त्विदं शिष्यादजैर्भावितं
सैः शूलनाशनं सुखबोधनम् ॥ ६२ ॥

अर्थ- सोठ हींग-सुहागा-पीपल-सैंधानोन-इन सब को-
सहजने की रसकी भावना देकर अनुमान माफिक भक्षणा करे
तो मंदानि और शूल को नाश करे ॥ ६२ ॥

हरीतकपादिवटी

हरीतकी हरितुल्य षडगुणा चतुर्गुणा
चतुरविंशलपिप्पली चित्रकं वरदव-
रैक सैधवं सापनं कुरुनृप वटिवह्निं

दीपनी ॥ ६३ ॥

अर्थ- छोटी हरड़ ६ भाग-पीपल-गजपीपल ४ भाग-चित्रक
१ भाग-सैंधानोन-१ भाग इन सब को मिलाय कूटकर नीबू के
रस में गोली बनावै यह रसायन है सब रोगों को दूर करे ॥

तक्रहरीतकी

तक्रै सुसंखेय शिष्याशतानित हीज
मुष्ट्यचकै शलेन षड्वराणां च प
टनि हिं गुह्यरावजाजीमज मोदकं च
६४ षड्वराणां देवि वृद्ध भागं गणो
प्रदेयं पेटगालितस्य विभाव्यचुके
सास्त्रां स्पृमीषां क्षिपे च्छिवां बीजनि
कास्य गर्भे दैधु समूत्य धर्मेषु विशो
व्यतासां हरीतकी मन्यतमानि ये
वेत् अजीर्ण मंदानलजाट रामया
न समूलशूलं ग्रहणी गुदां कुरान् ६६
विवंधमाना हरुजो जयत्यसौ स आ
मवाता वमृता हरीतकी ॥ ६३ ॥

अर्थ- बड़ी हरड़ १०० ले उनको काट में और १ पीछे इन-
की गुठली निकालिये औषध भरें पीपल-पीपलमूल-चक्र-
चित्रक-सोठ-मिरच-काली-दालचीनी-सैंधानोन-साह्यारमो-
न-कालानोन-खारीनोन-कवियानोन-हींग-जवाखार-सर्वाखार

जीराजमोद येषत्येक १ तोला लेय और निसोत आधे तो
ला इन सब को कूट पीस बखमें छान इसमें चूका की भावना
देकर पूर्वोक्त हाडों में भरे पीछे इन हरों को घानमें सुरवाय
कर धराखे इसमें १ हर डखाय तो इतने रोग दूर होय अजी
र्ण मंदाग्नि उदर के रोग अल संयहणी बवासीर बंधकोष्ठ
अफा औ रोगा मवात इन सब कानाश करे इसको अमृत हरी
तकी कहते हैं ॥ ६७ ॥

वैश्वानर द्धार ॥

सुत्यर्क चिचकैरंडल वरांस पुनर्न-
वंतिलापामार्ग कदली पलाशाति
तिणीतया ६८ गृहीत्वा ज्वालयेदत
त्यस्यं भस्मा रिवलं च तत् जलाढके
विपक्तं पावसादावशेषितः ६९
सुप्रसन्न विनिः श्वाब्जल वरांस्य
संयुतं पक्कनिर्धूमकठिरासस्म-
चूर्णं कृतं पुनः ७० यवानी जीरक
आयस्थूल जीरक हिंगुभिः प्रयुग
हृपलेरेभिश्चूर्णितैस्तं विमिश्रयेत्
७१ आर्द्रक खरसेनापि भावयेच्छेष
येत्युनः शीतोदके नत चूर्णं पिबेत्प्रात
हि माषया ७२ तस्मिन् जीर्णः नम

श्रीयाद्यैर्जोगलजैरसैः इयदस्सैः
सत्नवरौः सुरवोसैर्वहिदीपनैः ७३
एतेनाग्निप्रवर्द्धतव बलपारोग्यमे
वच तत्रानुपानं शास्त्रं हितं कंवाभो
जने हितं ७४ मंदाग्न्यर्शो विकारेषु
वातप्लेहामयेषु च सर्वांगशोथ
रोगेषु शूलगुल्मोदरेषु च ॥ ७५ ॥
आमार्श शर्करापांतु विरामूचानिल
रोगिषु

अर्थ- यह र, आक, चीता, अर्द्ध, नोन, सोन, तिल, जोंग,
केला, टाक, इमली, इन सब को भस्म कर इसकी भस्म २५ ई तो
ले लेय पीछे इसको १० २४ तोले जलमें औंटावे- जब चौ-
था हिस्सा बाकी रहै तब उस को उतार छान लें पीछे इसमें
६४ तोले नोन मिलाय कर फेर औंटावे इसरी तिसी निर्धूम
कठोर औंसाधार प्रगट होय उस द्धार को ले कर धारी कपीस
पीछे इसमें यह औंसाध और मिलावे अजमायन जीरा-सोद
मिरच-पीपर-बड़ा जीरा-हींग-येषत्येक २ तोले लेय इ
न्को मिलाय इसमें अदरक के रस की भावना देकर सुरवाय
कर धराखे हैं इसमें सेंप्रातः काल बल के माफिक शीतल ज
ल के साथ भस्म राकौं जब यह औंसाध पच जाय तब बनके
जीवों के नाश कर स तथा यष चोडाख द्वाप दार्य नोन को मिला

य कुष्ठगरम कर और अग्नि दीप्त करने वाले पदार्थ खाने
को देय तो अग्निबल आरोग्यता इनकी वृद्धि होय इस
औषध खाने के पीछे छाछ पीवै अथवा यह औषध भो-
जन के समय देने उचित है. मंदाग्नि. बवासीर. वात क-
फ. सब देह की सृजन. मूल. गोला. उदर के समस्त रोग. आ-
मवात. मल. मूत्र. संबंधी रोग. वादी के रोग. इनको यह
वैश्वानर नाम खार दूर करता है ॥७५॥

{ क्षारयोग }

द्वौ क्षारी टंकणं सूतं लवंगं लवणं
त्रयं पिप्पली गंधकं शुंठी मरिचं प-
लसंमितः ॥७६॥ कर्षमेकं विषं दत्त्वा
सहस्रचूर्णानि कारयेत् अर्कदुग्ध
स्पृष्टा तमाभावनाः सप्तवासराः ॥७७॥
अथ मूषा गजपुटे स्वांगशीतं समु-
द्धरेत् तोलवंगमिरचं स्फटिकानां
पलं पले ॥७८॥ सर्वसंमर्द्य सुहृदं ह-
ृदभां दे निधापयत् सोयं गुंजाद्वयं
खादे द्रुक्तं द्रावयति क्षरात् ॥७९॥
पुनर्भोजनं बाह्या च जनयेत् सहरोप-
रि आममांसं द्रावयति श्लेष्मरोग-
निर्हंतनः ॥८०॥

अर्थ. सजीखार. जवाखार. सुहागा. पारा. लोंग. तीनों नोन
पीपल. गंधक. आमलासार. सुह. सोठ. मिरच. ये पत्येक चा-
र २ तोले सिंगिया विष १ तोले इन सब का बारीक चूर्ण कर
स्में आक के दूध की सात भावना देय पीछे इसको गजपुट में
धार कर फूंक दे जवशीतल होय तब इसमें लोंग. कालीमिरच
और फिटकरी इनके चार २ तोले चूर्ण कर इसमें मिलावै पीछे
इसको अच्छे पात्र में भर कर धराखे रोगी को इसमें से २ रत्ती खा-
ने को देय तो क्षरामात्र में भोजन को पचाय देय और पहरा
में ही दूसरे भोजन करने की इच्छा करे और आमवात मांसको दू-
र कर दे और कफ के समस्त रोगों को दूर करे ॥८०॥

{ दुतिक्षारयोग ॥ ८१ }

भुक्ते पथ्या भुक्ते पथ्या भुक्ताः भुक्ते
पथ्या पथ्या ॥ जीर्णे पथ्याः जी-
र्णे पथ्या जीर्णाः जीर्णे पथ्या प-
थ्या ॥८१॥

अर्थ. भोजन करने के उपरंत हरइ पथ्य है क्योंकि अन्न के
पाचन करने में भोजन के पथ्य में भी हरइ पथ्य है क्योंकि अ-
ग्निको दीप्त करे है और भुक्ता भुक्त कहिये भोजन के उपरंत
वमन होजाय उसमें हरइ पथ्य है क्योंकि वमन के सब दोष
नाश करता है और अन्न जीर्ण होने से भी हरइ पथ्य है पका-
सय को शोधन करे है अजीर्ण में भी हरइ पथ्य है क्योंकि दीप

महोनेसें तथा जीर्णाजीर्णी कहिये कुछ न अत्र पचाहो कुछ
नहीं पचाहो उसमें भी हरड प्ये है सो कि विग्य अत्र कोरी
प्र पाक करता है ॥८१॥

करायाद्यचूर्णी

करायासिंधुशिवावन्निचूर्णाजस्मेन-
वारिणा पीतप्रातःसुधांकुर्प्यात्मा
वकस्यापि दीपनम् ॥८२॥

अर्थ. पीपल. सेंधानोन. हरड. आमरे. चित्रक. इनका
चूर्ण प्रातःकाल तत्र जलसें भक्षण करै तो भूखको बढ़ावे.
॥ और जठराग्निको दीप्त करै ॥८२॥

जिरकादिचूर्णी

जिराहचकण्ठीपिप्पलीतीक्ष्णावे
ल्लसलवणमजमोदाहिगुप्येति
कर्षे पृथगप्यपलमाचास्यात्रिचूर्ण
र्णामेवाजननमुदरवहे. पाचनरो
चनच ॥८३॥

अर्थ. जीरा. संचरानोन. सोंठ. पीपल. कालीमिरच. वायविडुंग.
सेंधानोन. अजमोज. हींग. हरड. इन सब. औषधों को तोले
तोले भरलेय सब कटकर चूर्ण बनायलेय यह चूर्ण उदरकी
अग्निको बढ़ावे पाचक और रोचक है ॥८३॥

हिंगाष्टकचूर्णी

त्रिकटुकमजमोदासैंधवजीरकेहे
समचराष्टतानामष्टमोहिगुभागः
प्रथमकवडभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेत
न्ननयतिजठराग्निंवातगुल्फंनि
॥ हंति ॥८४॥

अर्थ. सोंठ. मिरच. पीपल. अजमोद. सेंधानोन. दोनो जीरे.
इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण बनावे. परंतु इसमें हींग
एतमें भूतकर मिलावे इस हिंगाष्टक चूर्णको भोजनके समय
प्रथम गस्सामें एतके साथ मिलायकर खानेसें अग्निको बढ़ावे
और वायुगोला को दूर करे है ॥८४॥

बन्दिनामकरस

जाती जातं त्रिकर्षमरिचमपिप
लं चार्धकर्षपुमारां गंधं सतल
वंगं विषमिदमखिलं चिचराणी-
सस्य तोये पिष्ट्वा मांथेकमाचावि
तरति दहनं बन्दिनाद्यं च सद्यो-
रोगानश्लानिलादीन दहति क
तगुरां बन्दिनामारसोयं ॥८६॥

अर्थ. जावित्री तोला १॥ जायफल तोला १॥ मिरच तो. ४
गंधक. मार. लोंग. सिंगियाविष. सत्केक आधा तोला इन सब
वको बांरिक पीसकर इसमें इमली के रसकी भावना देकर ऊड

दके बराबर गोली बनावे इससे एक गोली अनुपान के संग प्रा-
तः काल अथवा सायंकाल खाये तो मंदाग्निकानाश होय वा

[बृहच्छंखवटी ॥]

सुगर्कचिंतापामार्गरेभातिलपला
शजान् ह्यारांश्रभिषगोदद्यापत्ये
कं पलमात्रया लवणानिष्टयक
पंचधात्यागि पलमात्रया सज्जि
काचयवक्षारं टंकणं चितयंपलं
सर्वेचयोदशपलं शस्यचूर्णं विधा-
पयेत् निर्वफलरसेऽस्थं संमिते
तत्परिस्थियेत् तच्च शोखस्य शक-
लपलं वन्हौ प्रताप्य तु वारात्रिर्वा-
ययेत्सर्वेद्रवतितद्यथा नागरं चि-
कैलं ग्राह्यं मरीचं च यलद्वयं पीप्य
लीपलमानास्यात्पलाधेभृष्टहिंण-
नः गुंथिकं चिचकं चापियवानी
जीरकं तथा जातीफलं लवंगं च
पृथक् कर्षद्वयोन्मितं रसगंधो वि-
षं चापि टंकणं च मनःशिला रता
निकर्षमात्राणि सर्वे संचराये मिश्र-
येत् शरावार्धेन चुकेण सन्नीय च

दिक्काचरेत् मायप्रमाणासावेद्यैर्दृ-
हच्छंखवटी स्मृता सर्वजीर्णप्रश-
मनी सर्वशूलनिधारणी निभक्ष्य
लसकादीनां सद्यो भवाग्निभाषणी

अर्थ- यह र-आम-इमली-ओगा-कंला-तिल-दाक-इन
सब द्यारे को चार २ तोले लेय-सांभर-नांन-कचिपानी-ब-
काला-भोन-सेधानोन-सबुदनोन-पेचर-तोले लेय-स-
खार-जवाखार-सुहागा-यह सब ५२ वा बत तोले लेय-सब
को कट पीसकर चूर्ण कर ६४ तोले नीबू के रस में भावना देय
पीछे चार ४ तोले शंख के दुकड़े लेय उन्हें आंच में तपाय २
के जो पत्र में बुझावे ऐसे सात बार बारने से शंख की भस्म हो
जाय तदनंतर सोठ १२ तोले-मिरच ८ तोले-पीपल ४ तोले
भुजी हींग २ तोले-पीपलामूल-चिचक-अजमायन-जीर-
जायफल-लौंग-यह प्रत्येक दो दो तोले लेय-पारा-गंधक
सिंगिया-विष-सुहागा-मेंनसिल-ये सब औषध एक २ तोले
लेय-इन सबको दुकड़ी कर १६ तोले चूका के रस में मि-
लायकर गोली बनावे इससे एक माशे नित्य खाये तो अजी-
र्णी-शूल-हेजा-अलसक-इनको तत्काल नाश करे इसको

बृहत् संखवटी कहते हैं ॥

अग्नि कुमार रस
पारदं शुद्ध गंधं चावेयं चेतिभिः समं

कपर्दविषतुल्यांशं तच्चुल्यं स्वर्जि
काकरा ॥१॥ शुंठीचाष्टगुणायुक्ता
मरिचमेलयद्दुधः मर्दयित्वा ख
लेकृत्वा पावसाकजलप्रभा ॥२॥
जंवीरनीरैर्दयाचभावनासप्तवैत
तः आर्द्रकस्पर्शेनैव ततः सिद्धं द्वि
गुंजकं ॥३॥ रसश्चाग्निं कुमारोयं आ
मसेचयज्जं अग्निमांघमजीर्णं
चनाशयेत्कफहृत्परः ॥४॥ ॥

अर्थ. पारा. गंधक. सिंगियाविष. यह सब बराबर लेय.
कोडीकी भस्मतीनभागलेय. तज्जीखार. सुहागा. पीपल. ये
१भाग ले. सोठ ८ भागलेय. मिरच ८ भाग. इन्को खालमें ब
हुत वारीक कर नीबूके रसकी सातभावना देय. पीछे इसमें
दो रत्नी मनुष्य खायतो यह अग्नि कुमार रस आमके समू
हको नाश करे मंदाग्नि. और अजीर्ण को दूर करे तथा कफ
को हरे है ॥४॥

अग्निदीपनी गोली

गंधकं मरिचं शुंठी सैधवं यवजं
तवं निंबू रसेन वटिक चरामा च
ग्नि दीपनी ॥

अर्थ. गंधक. काली मिरच. सोठ. सैधानोन. इन्द्रजो. वाय

विडंग. इन्को चूरी को नीबूके रसमें चना वरा वरगोली बना
वे इस गोलीके खानेसे अग्नि दीप्त हो अजीर्ण नाश होय ॥

महोदधिगोली

एकेकं विषसतं च जातिटंकद्विकं
द्विकं कृष्णात्रिकं विश्वषट्कंदग्ध
स्याच्च कपर्दिका देवपुष्पं वागामि
त सर्वसंमर्षयत्नतः महोदधिव
टी नाम नष्टमग्निं प्रयोजयेत् ॥

अर्थ. शुद्ध सिंगियाविष. १भाग. पारा १भाग. जायफल २भा
ग. सुहागा २भाग. पीपल ३भाग. सोठ ६भाग. कोडीकी भस्म
६भाग. लोंग ५भाग. इन सबका चूरी करे इसको महोदधिव
टी कहते हैं यह अग्नि को बढ़ाती है ॥

चित्रकादिचूरी

चित्रको नागरं हिं गुपिप्ली मूल
पीप्ली चम्पा जमाद मरिचं प्रत्ये
कं कर्षसंमितं स्वजिका चयवक्षा
रः सिंधुसौवर्चलं विडं सामुद्रिकं
रोमकं च कोलमात्रा शिकारयेत् ॥
एकीकृत्वा खिलं चूरी भावयेन्मा
तुलंगजैः रसैर्वा दाडिमैर्वा पिशो
रयेदातपेन वा तच्चूरीनाशयेद्

लुप्तं ग्रहणीमामजं रुजं अग्निचकु
रुते दीप्तिरुचिकृत्कफनाशनं ॥ ॥

अर्थ- चीता सौंठ हींग पीपरिमूल वच अजमोद मिर्च
सब कर्ष २ भरलेना दोनो खार सेंधानोन कालानोन समु
दनोन सांभरानोन कचियानोन ये कोल कोल ले चूरी करि
विजोरा के रसमें भावना देकर घाममें सुखाय लेव यह चूरी
गुल्म ग्रहणी आमरोग हरे अग्नि दीप्त करे रुचि करे कफनाश

॥ करे ॥

नवगुणानवचन्द्रवत्सरेयौ येषु
क्षुद्रलेऽग्निसतिषौ सुरगुरुरि
पुवासरे वरेषाम्ना पूर्ण मजीरी मे

॥ जरी ॥

इति अजीर्णी मंजरी ॥

समाप्तः

शुभं

हस्ताक्षर परिडित केशव

देव शर्मा

इति

MYSORE : BOUND
BY
M. VENKETRAMANAYYA

